TLPS | Teaching Learning Practices Survey

Anchored by LANGUAGE and LEARNING FOUNDATION
Strong Foundation, Stronger Future

Supported by TATA TRUSTS

टीचिंग लर्निंग प्रैक्टिस सर्वे - झारखण्ड

भारत में एफएलएन शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं को सशक्त करने के लिए एक अध्ययन

2025 | सारांश

Implemented with

Ei

Vikramshila

TLPS 2025
टीचिंग लर्निंग प्रैक्टिस सर्वे 2025, झारखण्ड

दिसम्बर 2025

सहयोग:	टाटा ट्रस्ट
क्रियान्वयन में भागीदार:	विक्रमशिला एजुकेशन रिसोर्स सोसाइटी, लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन (एलएलएफ)
मूल्यांकन भागीदार:	एजुकेशनल इनिशियटिव (ईआई)
सरकारी भागीदार:	झारखण्ड सरकार

इस रिपोर्ट में उपयोग में लाए गए समस्त चित्र लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन द्वारा लिए गए हैं।

डिजाइन एवं सम्पादन:	न्यू कन्सेप्ट इनफॉर्मेशन सिस्टम्स, नई दिल्ली।
आवरण की डिजाइन:	आकाश भगत

LLF वेबसाइट **https://languageandlearningfoundation.org/** पर यह रिपोर्ट उपलब्ध है।

इस रिपोर्ट के किसी भी अंश का उपयोग उचित अनुमोदन के साथ अव्यावसायिक उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है।

संदर्भ के लिए देखें:
लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन. (2025). *टीचिंग लर्निंग प्रैक्टिस सर्वे 2025. झारखण्ड*
https://languageandlearningfoundation.org/teaching-learning-practices-survey/

प्रकाशकः
लैंग्वेज एण्ड लर्निंग फाउण्डेशन
पहला तल, ब्लाक बी, 8, गुरु रविदास मार्ग
बालाजी एस्टेट, कालकाजी
नई दिल्ली-110019

कार्यकारी सारांश

परिचय

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (नेशनल एजुकेशन पॉलिसी - एनईपी) 2020 ने देश की शिक्षा पद्धति में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान (फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमेरेसी या एफएलएन) को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। इस फोकस को राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-बुनियादी स्तर (एनसीएफ-एफएस 2022) ने और भी मजबूत किया है। इस विजन को प्राप्त करने के लिए भारत सरकार ने स्पष्ट अधिदेश के साथ निपुण भारत मिशन शुरू किया है। ये अधिदेश है- 2026-27 तक सभी बच्चों को सार्वभौमिक एफएलएन का लक्ष्य प्राप्त करना है। इससे सभी राज्यों में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान (एफएलएन) को और बेहतर बनाने के प्रयासों को बढ़ावा मिला है।

झारखण्ड राज्य शिक्षा प्रणाली ने राज्यव्यापी एफएलएन अभियानों, कक्षा-स्तरीय मूल्यांकन प्रणालियों और शिक्षकों और बच्चों के लिए डिजिटल क्षमता निर्माण के माध्यम से अपने विद्यालय-शिक्षा सुधार कार्यों को इन लक्ष्यों के अनुरूप तैयार किया है। एफएलएन के प्रयास राज्य के 24 जिलों में लगभग 35,000 सरकारी स्कूलों तक विस्तारित हो गए हैं, जिससे कक्षा 1-3 में लगभग 15 लाख बच्चों तक पहुँच संभव हो सकी है। राज्य ने एफएलएन कार्यक्रम के तहत लगभग 70 हजार शिक्षकों को नियुक्त किया है, जिन्हें सुव्यवस्थित प्रशिक्षण, जे-गुरुजी प्लेटफॉर्म के माध्यम से डिजिटल संसाधन और विद्यालय स्तर पर मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है।

टीएलपीएस 2025 के बारे में

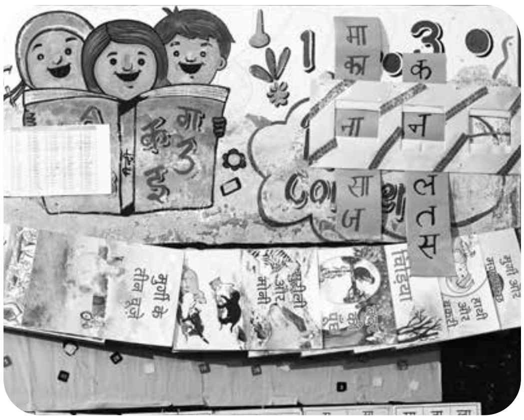

कक्षा 1 और 2 में भाषा और गणित शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं पर व्यवस्थित साक्ष्य देने के लिए टीएलपीएस 2025 की परिकल्पना की गई थी। प्रारंभिक कक्षाओं के विविध संदर्भों में इन शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं की जाँच करते हुए सर्वे यह दर्शाता है कि बच्चों की सीखने की सामग्री, शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम और अकादमिक मदद से शिक्षण-अधिगम की प्रक्रियाओं में क्या परिवर्तन हो रहा है। यह सर्वे अवलोकित कक्षाओं में वर्तमान शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं की स्थिति को दिखाता है और साथ ही यह भी बताता है कि शिक्षा प्रणाली के स्तर पर किए जा रहे प्रयासों से कक्षाओं में किस हद तक शैक्षणिक बदलाव हो रहे हैं और किन क्षेत्रों में अतिरिक्त सुधार की आवश्यकता है।

झारखण्ड में यह सर्वे नवंबर-दिसम्बर 2024 में किया गया था। इस सर्वे में दो जिलों (कोडरमा और पूर्वी सिंहभूम) के 100 स्कूलों को शामिल किया गया था।

निष्कर्ष और अनुशंसाएँ

इस सर्वे में निम्न विषयों पर निष्कर्ष प्रस्तुत किये गए हैं- कक्षा में सीखने का वातावरण, पाठ योजना और प्रस्तुतीकरण, भाषा शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ, गणित शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ, और शिक्षकों एवं बच्चों की कक्षा गतिविधियों के लिए समय विभाजन। यह एफएलएन के कुछ पहलुओं और शिक्षकों के व्यावसायिक विकास पर उनकी धारणाएँ भी प्रस्तुत करता है।

कक्षा शिक्षण प्रक्रियाओं और शिक्षा प्रणाली स्तरीय परिवर्तन के लिए प्राथमिकताएँ

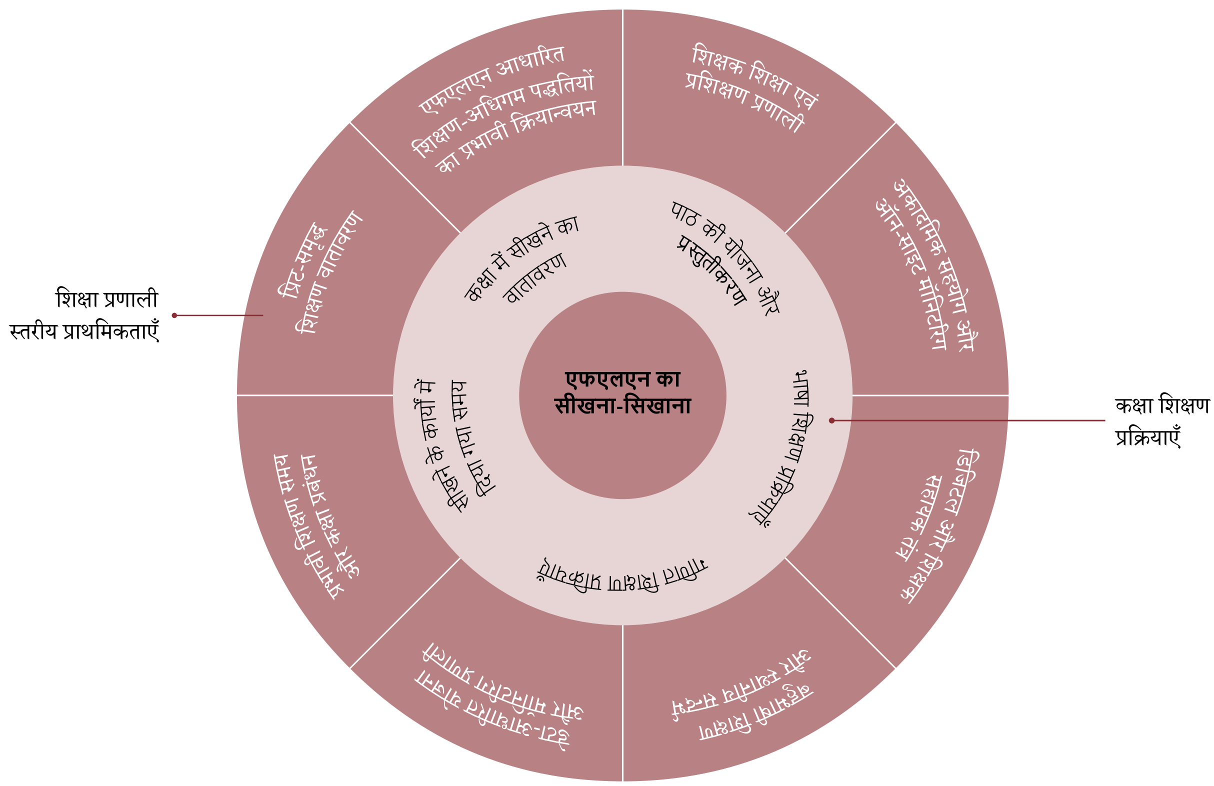

इस रिपोर्ट में दो प्रकार की अनुशंसाएँ शामिल हैं:

> **कक्षा शिक्षण प्रक्रियाओं को सुदृढ़ करने के लिए अनुशंसाएँ** जो सीधे तौर पर सर्वे के मुख्य निष्कर्षों पर आधारित हैं। इन्हें अगले प्रखंड में कक्षा-स्तरीय निष्कर्षों के साथ दिया गया है।

> **शिक्षा प्रणाली के स्तर पर परिवर्तन संबंधी अनुशंसाएँ** जो प्रभावी शिक्षण प्रक्रियाओं को लागू करने और उनके स्थायित्व में मदद करेंगीं। इन अनुशंसाओं को कक्षा शिक्षण प्रक्रियाओं से संबंधित अनुशंसाओं के बाद के प्रखंड में प्रस्तुत किया गया है।

कक्षा शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं के लिए निष्कर्ष और अनुशंसाएँ

कक्षा में सीखने का वातावरण

सर्वे में निम्न पहलुओं का अध्ययन किया गया था- कक्षा का भौतिक वातावरण, शिक्षक और बच्चों के संबंध, बच्चों को भागीदारी के अवसर, और बच्चों की घर की भाषा का उपयोग।

मुख्य निष्कर्ष

अवलोकित कक्षाओं में से आधे से अधिक कक्षाओं (53%) में प्रिंट-समृद्ध सामग्री प्रदर्शित थी और इनमें से 79% कक्षाओं में बच्चों की आँखों के स्तर पर लगाई गई थी।

तीन-चौथाई (75%) कक्षाओं में बैठने की व्यवस्था पंक्तिबद्ध थी। अवलोकन के दौरान कक्षाओं में बैठक व्यवस्था में बदलाव नहीं किया गया था।

पाँच में से दो (40%) कक्षाओं में बच्चे सहज दिखाई दिए। वे खुलकर अपनी बात रख रहे थे और शिक्षकों से बेझिझक संवाद कर रहे थे।

हालाँकि 81% शिक्षक बच्चों की घर की भाषा जानते थे, लेकिन बहुत कम शिक्षकों ने ही बच्चों की भागीदारी और समझ को बढ़ाने के लिए इसका भरपूर उपयोग किया।

अनुशंसाएँ

यह सुनिश्चित किया जाना जरुरी है कि सभी कक्षाओं में प्रिंट-समृद्ध सामग्री प्रदर्शित हो और बच्चों की पहुँच में हो। साथ ही शिक्षण के दौरान इसका सक्रिय और सार्थक रूप से उपयोग किया जाए ताकि सीखने में सहयोग मिल सके।

शिक्षकों को छात्रों के बैठने की लचीली व्यवस्था और समूह बनाकर पढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। ताकि बच्चों में पारस्परिक विचार विमर्श और सहयोग को बढ़ावा मिले।

प्रारंभिक कक्षाओं में शिक्षक और बच्चों के संबंध को मजबूत करने की तुरंत आवश्यकता है, ताकि बच्चे अधिक आत्मविश्वासी बन सकें, चर्चा में भाग ले सकें और सीखने की प्रक्रिया में सार्थक रूप से जुड़ सकें।

बच्चों की घर की या सबसे परिचित भाषा का नियमित और सोच-समझकर उपयोग करना बच्चों के आत्मविश्वास, भागीदारी और समझ बढ़ाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

पाठ योजना और प्रस्तुतीकरण

इसके अंतर्गत सर्वे में निम्न पहलुओं का अध्ययन किया गया था- शिक्षकों द्वारा बच्चों को स्पष्ट निर्देश देना, बच्चों के स्वतंत्र कार्य का अवलोकन और मॉनिटरिंग करना, लेखन कार्यों पर फीडबैक देना, समझ की जाँच के लिए विभिन्न रणनीतियों का उपयोग और कक्षा में सीखने के विभिन्न स्तरों के अनुसार विभेदीकृत शिक्षण (डिफरेंशिएटेड इंस्ट्रक्शन) का उपयोग करना।

मुख्य निष्कर्ष

साक्षात्कार के दौरान दो-तिहाई से अधिक (69%) शिक्षकों ने बताया कि वे पाठ योजना तैयार करते हैं। कक्षा अवलोकन के दौरान भी 60% शिक्षकों के पास लिखित पाठ योजना उपलब्ध थी।

अधिकांश शिक्षकों (87%) ने समूह या व्यक्तिगत कार्य के दौरान बच्चों के काम की नियमित निगरानी नहीं की या ऐसा कुछ बच्चों के साथ कभी-कभार किया।

कुछ शिक्षकों (20%) ने बच्चों का लिखित कार्य तो देखा, लेकिन बहुत कम शिक्षकों ने इस प्रकार का सार्थक फीडबैक या मार्गदर्शन दिया, जिससे बच्चे अपनी गलतियाँ सुधार सकें।

लगभग दो-तिहाई (65%) शिक्षकों ने बच्चो की समझ जानने के लिए समवेत प्रतिक्रिया पर भरोसा किया। हालाँकि इससे यह स्पष्ट नहीं होता कि बच्चे ने व्यक्तिगत रूप से क्या सीखा है।

अवलोकित अधिकांश (94%) कक्षाओं में शिक्षकों ने अपने शिक्षण में किसी भी प्रकार की विभेदीकृत शिक्षण की रणनीति का उपयोग नहीं किया।

अनुशंसाएँ

नियमित और उद्देश्यपूर्ण अवलोकन के माध्यम से शिक्षकों को बच्चों की त्रुटियों की पहचान करना, शिक्षण को समायोजित करना और समय पर बच्चों की मदद करनी चाहिए।

बच्चों के काम की नियमित जाँच, गलतियों की स्पष्ट पहचान और सुधार के लिए सरल उपायों के माध्यम से फीडबैक की प्रक्रिया को मजबूत करना आवश्यक है।

पाठों के दौरान बच्चों की समझ की जाँच के लिए सरल और विविध तरीकों का उपयोग करना चाहिए, जैसे कि प्रत्येक बच्चे से उनकी सोच को समझाने के लिए कहना या बच्चों को अपनी सीख प्रदर्शित करने के लिए एक छोटा सा कार्य देना।

सभी विद्यार्थियों को सहयोग प्रदान करने के लिए, शिक्षकों को स्पष्ट रणनीतियों का उपयोग करना चाहिए, जैसे कि लचीले समूह बनाना, स्तर-आधारित समूहों में मार्गदर्शित अभ्यास कराना और नियमित पाठों के दौरान सहायक कार्य (स्कैफफोल्डेड टास्क) देना।

उचित पहचान के बाद, सीखने में कठिनाई का सामना कर रहे बच्चों को अतिरिक्त ध्यान और सहायता प्रदान करना आवश्यक है।

भाषा शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ

इसके अंतर्गत सर्वे में निम्न पहलुओं का अध्ययन किया गया था- चर्चा के दौरान बच्चों के पूर्व ज्ञान का उपयोग, खुले छोर वाले प्रश्न पूछना, डिकोडिंग सिखाने के लिए अलग-अलग रणनीतियों का उपयोग, पढ़कर सुनाते (रीड अलाउड) समय समझ आधारित रणनीतियों का उपयोग, बच्चों को स्वतंत्र रूप से पढ़ने के मौके देना, तथा अभिव्यक्तिपूर्ण लेखन के लिए स्पष्ट संकेत प्रदान करना।

मुख्य निष्कर्ष

मौखिक भाषा विकास संबंधी गतिविधियों के दौरान लगभग आधे (48%) शिक्षकों ने बच्चों के वास्तविक जीवन के अनुभवों को शामिल किया।

खुले छोर वाले प्रश्नों का उपयोग बहुत सीमित था। इससे बच्चों को सोच-विचार करने और स्वयं को अभिव्यक्त करने का कम अवसर मिला।

डिकोडिंग का शिक्षण व्यवस्थित नहीं था। यह या तो केवल अक्षर या शब्द लिखने पर आधारित था अथवा ध्वनि-प्रतीक संबंध और शब्द जोड़ने (ब्लेंडिंग) को सुदृढ़ करने के लिए केवल एक ही गतिविधि पर आधारित था।

हालाँकि दो-तिहाई (62%) कक्षाओं में बच्चों को स्वतंत्र रूप से पढ़ने का अभ्यास करने का अवसर मिला। बहुत कम शिक्षकों ने इस दौरान बच्चों को मार्गदर्शन और सहयोग प्रदान किया।

दो-तिहाई से अधिक (71%) शिक्षकों ने इस प्रकार का लेखन कार्य दिया, जिसमें बच्चों को ब्लैकबोर्ड या पाठ्यपुस्तक से नकल करना या केवल अक्षर और शब्द लिखना शामिल था।

अनुशंसाएँ

मौखिक भाषा की गतिविधियों में बच्चों की सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। इसके लिए जरुरी है कि विषयों और चर्चाओं को संदर्भों और अनुभवों से जोड़ा जाए। बच्चों से अनुमान लगाने, सोचने और निष्कर्ष निकालने के लिए कहा जाए। और इसके साथ ही उन्हें खुले छोर वाले प्रश्नों के उत्तर में खुलकर बोलने का अवसर प्रदान किया जाए।

डिकोडिंग को अधिक व्यवस्थित तरीके से सिखाने की आवश्यकता है। इसमें ऐसी कई गतिविधियाँ शामिल होनी चाहिए, जो ध्वनि और अक्षर के संबंध को अलग-अलग तरीकों से मजबूत करें। इसमें सरल शिक्षण-अधिगम सामग्री (टीएलएम) का उपयोग भी शामिल है।

बच्चों को शिक्षक के मार्गदर्शन में छोटे समूहों या जोड़ों में और साथ ही स्वतंत्र रूप से पढ़ने के लिए पर्याप्त समय दिया जाना चाहिए।

लेखन गतिविधियाँ केवल देखकर लिखने तक सीमित नहीं रहें इसके लिए बच्चों को स्वयं सोचकर लिखने तथा विचारों और भावनाओं को लिखित रूप में व्यक्त करन के लिए सार्थक अवसर दिया जाना चाहिए।

गणित शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ

इसके अंतर्गत सर्वे में निम्न पहलुओं का अध्ययन किया गया था- शिक्षकों और बच्चों द्वारा शिक्षण-अधिगम सामग्री (टीएलएम) का उपयोग करना, गणित के कार्यों को बच्चों को स्वतंत्र रूप से करने के अवसर प्रदान करना, गणितीय अवधारणाओं को स्पष्ट करने के लिए बच्चों के वास्तविक-जीवन के अनुभवों का उपयोग करना तथा शिक्षकों द्वारा ‘क्यों और कैसे’ वाले प्रश्नों का उपयोग करना।

मुख्य निष्कर्ष

अवलोकित कक्षाओं में आधे से अधिक (59%) शिक्षकों ने गणित शिक्षण के दौरान टीएलएम का उपयोग किया। 34% शिक्षकों ने उसका प्रभावी ढंग से उपयोग किया।

आधे से अधिक (58%) कक्षाओं में बच्चों ने टीएलएम का बिल्कुल भी उपयोग नहीं किया।

अधिकतर शिक्षकों द्वारा गणितीय अवधारणाओं और प्रक्रियाओं को समझाने के लिए वास्तविक-जीवन के उदाहरणों का उपयोग नहीं किया गया या कभी-कभार किया गया।

आधे से कुछ अधिक (59%) कक्षाओं में बच्चों को स्वतंत्र रूप से अभ्यास करने के अवसर दिए गए। बहुत कम कक्षाओं में शिक्षकों ने इस दौरान बच्चों का अवलोकन किया और मार्गदर्शन दिया।

87% शिक्षकों ने गणित शिक्षण के दौरान तर्क-आधारित 'क्यों और कैसे' वाले प्रश्न नहीं पूछे।

अनुशंसाएँ

शिक्षकों द्वारा शिक्षण-अधिगम सामग्री (टीएलएम) का अधिक नियमित और बाल-केंद्रित तरीके से उपयोग करने की आवश्यकता है। यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि किसी और को करते हुए देखने के बजाय बच्चों को स्वयं करके देखने और अवधारणाओं को समझने के पर्याप्त अवसर मिलें।

गणितीय अवधारणाओं को सिखाते और उनका अभ्यास कराते समय परिचित और बच्चों के वास्तविक जीवन के अनुभवों को शामिल किया जाना चाहिए। इससे बच्चे दैनिक जीवन में गणित की प्रासंगिकता समझने और व्यावहारिक समस्या-समाधान के कौशल विकसित कर सकेंगे।

स्वतंत्र अभ्यास के दौरान, शिक्षकों को बच्चों के काम की सक्रिय रूप से निगरानी करने और समय पर मार्गदर्शन और प्रतिक्रिया प्रदान करने की आवश्यकता होती है ताकि अभ्यास यांत्रिक दोहराव से आगे बढ़कर वैचारिक समझ और प्रवाह को मजबूत कर सके।

शिक्षकों को 'क्यों और कैसे' वाले प्रश्न पूछने चाहिए। इससे बच्चे अपने विचारों को स्पष्ट करने, अपने उत्तरों के लिए तर्क देने और अपनी रणनीतियों पर चिंतन करने में सक्षम हो पाएँगे। इससे बच्चों में रटने पर आधारित सीखने को बढ़ावा देने के बजाये गहरी समझ और तार्किक सोच विकसित होगी।

सीखने के कार्यों पर समय

सर्वे के दौरान विभिन्न कक्षा गतिविधियों में शिक्षकों और बच्चों द्वारा बिताए गए समय पर भी ध्यान दिया गया था।

मुख्य निष्कर्ष

बच्चे कुल कक्षा समय के 23% समय के दौरान 'सीखने के कार्य में शामिल नहीं' (ऑफ-टास्क) रहे। जब बच्चे 'सीखने के कार्य में शामिल' (ऑन-टास्क) थे, तो भी उनका अधिकांश समय यांत्रिक या दोहरान वाले कार्यों में ही व्यतीत हुआ।

शिक्षकों का आधे से अधिक समय (58%) शिक्षक-केंद्रित गतिविधियों में व्यतीत हुआ।

अनुशंसाएँ

शिक्षकों को सीखने की प्रक्रिया में बच्चों की सक्रिय भागीदारी बढ़ाने के लिए शिक्षक-केंद्रित शिक्षण और शिक्षार्थी-केंद्रित अभ्यास के बीच बेहतर संतुलन बनाने की आवश्यकता है।

साथ ही, शिक्षकों को स्वतंत्र तथा समूह आधारित कार्यों की योजना अधिक सोच-समझकर बनानी चाहिए और उनका प्रभावी प्रबंधन करना चाहिए, विशेष रूप से बहु-कक्षा शिक्षण परिस्थितियों में, जहाँ शिक्षक का ध्यान बँटा हुआ रहता है।

अन्य निष्कर्ष

> शिक्षकों में एफएलएन लक्ष्यों और अधिगम प्रतिफलों के प्रति गहरी जागरूकता पाई गई थी।

> 59% शिक्षकों ने बताया कि उन्होंने पिछले एक साल में एफएलएन पर आधारित प्रशिक्षण में भाग लिया है।

> लगभग सभी शिक्षकों का विश्वास है कि निपुण/एफएलएन मिशन का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

> सर्वे में शामिल 70% शिक्षकों का कहना था कि उन्हें कभी-कभी या अनियमित रूप से अकादमिक सहयोग प्राप्त होता है।

शिक्षा प्रणाली के स्तर पर परिवर्तन के लिए अनुशंसाएँ

यह प्रखंड उन महत्वपूर्ण प्रमुख प्रणालीगत पहलुओं को रेखांकित करता है, जिन्हें सुदृढ़ करना आवश्यक है। इससे पिछले प्रखंड में वर्णित कक्षा-स्तरीय परिवर्तनों को प्रभावी रूप से लागू और सतत बनाए रखा जा सकेगा।

एफएलएन के लिए नीतिगत समर्थन को जारी रखना और उसे विस्तारित करना

यह अत्यंत आवश्यक है कि एफएलएन के लिए नीतिगत समर्थन वर्तमान समय-सीमा (2026–2027) के बाद भी जारी रहे। यद्यपि कक्षा 1 और 2 को प्राथमिक फोकस में बनाए रखना चाहिए, लेकिन आधारभूत कौशलों के सुदृढ़ीकरण के लिए नीतियों और कार्यक्रमों का विस्तार कक्षा 3 से 5 (प्रीपरेटरी स्टेज) तक भी किया जाना चाहिए।

इस समर्थन के विस्तार के साथ-साथ बुनियादी शिक्षण के कौशलों के दायरे को भी व्यापक बनाना होगा। इसके अंतर्गत भाषा में आलोचनात्मक चिंतन और विवेचनात्मक तर्क, सशक्त मौखिक अभिव्यक्ति और स्वतंत्र लेखन को शामिल

करना होगा। गणित में समस्या-समाधान की क्षमता विकसित करने एवं तर्कशक्ति का विकास करने को शामिल करने की जरूरत होगी। इस तरह का परिवर्तन कक्षा शिक्षण प्रक्रियाओं को केवल यांत्रिक कौशल अर्जन करने की बजाय वास्तविक जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में उपयोग के योग्य बनाएगा।

सेवा-पूर्व शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में एफएलएन पर फोकस करना

सेवा-पूर्व शिक्षक शिक्षा के पाठ्यक्रम में संशोधन की जरूरत है ताकि एफएलएन पर स्पष्ट फोकस किया जा सके, खेल-आधारित शिक्षण विधियों को शामिल किया जा सके, भाषाई व सांस्कृतिक विविधता वाली परिस्थितियों में शिक्षण के तरीके विकसित हो सकें और बहुस्तरीय एवं बहुकक्षीय शिक्षण के लिए व्यावहारिक रणनीतियाँ उपयोग करना संभव हो सके। सर्वे के निष्कर्षों से यह भी पता चलता है कि विभिन्न आधारभूत शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं (जैसे- शिक्षक-बच्चे के बीच सम्मानजनक संबंध बनाना, बच्चों की सहभागिता को प्रोत्साहित करना, स्पष्ट निर्देश देना तथा सीखने का अवलोकन कर प्रतिक्रिया प्रदान करना) को बहुत कम या अनियमित रूप से लागू किया जाता है। इसलिए शिक्षक शिक्षा में इन पहलुओं पर विशेष रूप से और स्पष्ट बल देने की आवश्यकता है। इसके साथ ही व्याख्यान-आधारित शिक्षण से आगे बढ़कर अभ्यास-आधारित और अनुभव-आधारित शिक्षक तैयारी की दिशा में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन किया जाना जरूरी है।

शिक्षकों के सतत व्यावसायिक विकास हेतु सुसंगत और अभ्यास-केंद्रित प्रणाली बनाना

शिक्षक प्रशिक्षण को अलग-अलग आयोजित होने वाले कार्यक्रमों के बजाय सतत व्यावसायिक विकास (सीपीडी) के रूप में पुनः परिकल्पित करने की आवश्यकता है। सतत व्यावसायिक विकास के अंतर्गत सीखने के कई तरीके हो सकते हैं, जैसे- व्यवस्थित कोर्स करना, मिश्रित और ऑनलाइन कार्यक्रम, कार्यशालाओं में व्यक्तिगत भागीदारी, व्हाट्सएप संदेश और संक्षिप्त एवं आवश्यकता के अनुसार सीखने के संसाधन।

प्रशिक्षण सत्र के दौरान अभ्यास-आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रमों पर अधिक जोर दिया जाना चाहिए, जिसमें प्रभावी रणनीतियों का प्रदर्शन, मार्गदर्शित अभ्यास, शिक्षकों के बीच सहयोग और गहन चिंतन को प्राथमिकता देना शामिल है। इससे शिक्षक नई रणनीतियों को आत्मविश्वास के साथ कक्षाओं में लागू कर सकेंगे।

सहकर्मी-आधारित अधिगम को सीपीडी की मुख्य रणनीति के तौर पर सशक्त किया जाना चाहिए। सीखने के लिए समूह बनाने, एक-दूसरे का अवलोकन करने, संयुक्त कार्य योजना तैयार करने और प्रभावी शिक्षण प्रक्रियाओं को साझा करने के माध्यम से शिक्षकों को परस्पर सीखने के अवसर प्रदान करने चाहिएँ। इन उपायों से प्रशिक्षण संदेशों को दोहराना और कक्षा शिक्षण प्रक्रियाओं में स्थायी परिवर्तन लाना संभव होगा।

शिक्षकों के लिए शैक्षणिक मार्गदर्शन और विद्यालय-स्तरीय सहयोग को सशक्त बनाना

सर्वे के अन्तर्गत किए गए शिक्षक साक्षात्कारों से पता चलता है कि उन्हें अक्सर अनियमित और सीमित अकादमिक सहयोग मिलता है। इसलिए अकादमिक सन्दर्भ व्यक्ति (एआरपी), संकुल सन्दर्भ व्यक्ति (सीआरसी) या समकक्ष कार्मिकों द्वारा नियमित कक्षा विजिट करते हुए विद्यालय-स्तरीय अकादमिक मार्गदर्शन को मजबूत बनाने की अत्यधिक आवश्यकता है। इस विजिट का उद्देश्य कक्षा शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं का अवलोकन, प्रभावी रणनीतियों का प्रदर्शन और प्रत्येक शिक्षक की परिस्थिति के अनुरूप ठोस एवं क्रियान्वित किए जा सकने वाले सुझाव प्रदान करना होना चाहिए। ऐसा सहयोग प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान को दैनिक कक्षा-अभ्यास में बदलने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।

मध्य-स्तर (मिड-टियर) के अकादमिक कार्मिकों को गैर-शैक्षणिक जिम्मेदारियों से मुक्त कर देना चाहिए ताकि वे शिक्षण सहयोग पर ध्यान केंद्रित कर सकें। साथ ही उन्हें नियमित अकादमिक प्रशिक्षण भी दिया जाना चाहिए, जिससे वे एफएलएन से जुड़ी अवधारणाओं, सक्रिय अधिगम आधारित कक्षा-शिक्षण प्रक्रियाओं और सहयोगात्मक पर्यवेक्षण के सिद्धांतों की गहरी समझ विकसित कर सकें। इसके अतिरिक्त संकुल-स्तरीय बैठकों को प्रशासनिक बैठकों के बजाय व्यवस्थित अकादमिक मंचों के रूप में पुनर्गठित किया जाना चाहिए।

घर की भाषा का उपयोग, बहु-कक्षीय शिक्षण और विभेदीकृत शिक्षण पर व्यवस्थित रूप से कार्य

इन मुद्दों पर काम करने के लिए योजनाबद्ध और व्यवस्थित कार्यक्रम आधारित सहयोग की आवश्यकता है। केवल सामान्य सुझावों या अकेले प्रशिक्षण प्रयासों से लाभ होना बहुत मुश्किल है।

घर की भाषा का उपयोग

बुनियादी अधिगम के लिए ऐसी व्यवस्थित बहुभाषी शिक्षण पद्धतियाँ विकसित करने और उन्हें समर्थन देने की आवश्यकता है, जो स्थानीय समुदायों की भाषाई वास्तविकताओं के अनुरूप हों। राज्यों को स्पष्ट पाठ्यक्रम और शिक्षण-पद्धति की रूपरेखा तैयार करनी चाहिए, ताकि शुरूआती वर्षों में बच्चों की सबसे परिचित भाषाओं को औपचारिक रूप से शिक्षण-अधिगम में शामिल किया जा सके। साथ ही इसमें सहयोग के लिए उच्च-गुणवत्ता वाली बहुभाषी शिक्षण-अधिगम सामग्री और मूल्यांकन के तरीके भी विकसित किए जाने आवश्यक हैं। बहुभाषी शिक्षण दृष्टिकोण को शिक्षक-शिक्षा के सेवा पूर्व और सेवा कालीन प्रशिक्षण में भी शामिल किया जाना चाहिए। जो शिक्षक बच्चों की घर की भाषा को समझते या बोलते नहीं हैं, उन्हें इन भाषाओं में बुनियादी संवाद कौशल विकसित करने के लिए प्रोत्साहित और सहयोग दिया जाना चाहिए।

बहुकक्षीय शिक्षण

बहुकक्षीय कक्षा स्थिति और बहुकक्षीय शिक्षण सरकारी विद्यालयों की एक सामान्य वास्तविकता है। सरकारी विद्यालयों में कई कक्षाओं के बच्चों की पढ़ाई-लिखाई एक ही कक्षा में कराया जाना सामान्य बात है। सर्वे में शामिल लगभग दो-तिहाई कक्षाएँ इसी श्रेणी में पाई गई थीं। बहुकक्षीय स्थितियों में काम करने वाले शिक्षकों को कई कक्षाओं के प्रभावी संचालन करने के लिए विशेष पाठ्यक्रम संबंधी मार्गदर्शन और शिक्षण तरीकों की आवश्यकता होती है। इसमें एक साथ कई गतिविधियों की योजना बनाना, स्व-निर्देशित कार्य का आयोजन करना, लचीले समूह बनाना और अलग-अलग कक्षाओं के बीच समय प्रबंधन करना शामिल है।

विभेदीकृत शिक्षण

शिक्षक संदर्शिका, प्रशिक्षण मॉड्यूल और अकादमिक सहयोग प्रणाली में यह स्पष्ट रूप से दर्शाया जाना चाहिए कि विभेदीकृत शिक्षण की रणनीतियाँ (जैसे लचीले समूह बनाना और छोटे समूहों के लिए मार्गदर्शित अभ्यास, विशेषकर उन बच्चों के लिए जो सीखने में कठिनाई अनुभव कर रहे हैं) दैनिक कक्षा प्रक्रियाओं के दौरान योजना बनाकर कैसे लागू की जा सकती हैं जैसे लचीले समूह बनाना और छोटे समूहों के लिए मार्गदर्शित अभ्यास, विशेषकर उन बच्चों के लिए जो सीखने में कठिनाई अनुभव कर रहे हैं। ऐसे बच्चों को अतिरिक्त ध्यान और सहयोग प्रदान करना कक्षा के भीतर सीखने के अंतर को कम करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

MONDAY
TUESDAY
THURSDAY
SATURDAY

टीएलपीएस 2025 के बारे में

टीएलपीएस 2025 द्वारा कक्षा 1 और 2 में भाषा और गणित के शिक्षण-अधिगम के तरीकों पर व्यापक स्तर के व्यवस्थित साक्ष्य प्रस्तुत किए गए हैं। यह सर्वे नवंबर 2024 से मार्च 2025 के बीच नौ राज्यों—असम, छत्तीसगढ़, हरियाणा, झारखण्ड, महाराष्ट्र, मेघालय, राजस्थान, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश—में किया गया था। इसमें 21 जिले और 1,050 कक्षाएँ शामिल थीं। अलग-अलग शैक्षिक सन्दर्भों को शामिल करते हुए, टीएलपीएस बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान (एफएलएन) के लिए वर्तमान शिक्षण-अधिगम की प्रक्रियाओं की एक स्पष्ट और समग्र तस्वीर प्रस्तुत करता है।

टीएलपीएस 2025 लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन के नेतृत्व में और टाटा ट्रस्ट के सहयोग से विभिन्न संस्थाओं के समूह द्वारा क्रियान्वित किया गया था। अध्ययन में शामिल संस्थाएँ हैं- सेंटर फॉर माइक्रो फाइनेंस (सीएमएफ), मधी फाउंडेशन, क्वालिटी एजुकेशन सपोर्ट ट्रस्ट (क्वेस्ट), विक्रमशिला एजुकेशन रिसोर्स सोसाइटी और एजुकेशनल इनिशिएटिव्स (ईआई)।

टीएलपीएस 2025 रिपोर्ट में प्रस्तुत निष्कर्ष कक्षा में सीखने-सिखाने के माहौल, पाठ योजना और उसके प्रस्तुतीकरण, भाषा और गणित शिक्षण के लिए कुछ चुनी गई शिक्षण प्रक्रियाओं, तथा शिक्षक और बच्चों की विभिन्न गतिविधियों में लगने वाले समय का वर्णन और विश्लेषण करते हैं। यह रिपोर्ट एफएलएन के कुछ पहलुओं और शिक्षकों के व्यावसायिक विकास के बारे में शिक्षकों की धारणाओं के बारे में भी बताती है। टीएलपीएस 2025 की सिफारिशें यह बताती हैं कि कक्षा शिक्षण की प्रक्रियाओं को कैसे बेहतर बनाया जा सकता है। साथ ही ये भी अनुशंसा करती है कि शिक्षा प्रणाली के स्तर पर कौन से सुधार किए जाने चाहिए, जिससे एफएलएन के दौरान शिक्षण-अधिगम के तरीकों में होने वाले बदलावों को संभव और स्थायी बनाया जा सके।

LANGUAGE and LEARNING FOUNDATION

Strong Foundation, Stronger Future.

www.languageandlearningfoundation.org
Language and Learning Foundation
@llf_ig
Language and Learning Foundation
LLF_edu
languageandlearningfoundation1193

TLPS 2025 के लिए प्रपत्र और कक्षा-वार डेटा तालिकाएँ ऊपर दिए गए QR कोड से प्राप्त की जा सकती हैं।